पढ़ाई के साथ-साथ रोज़गार
शॉर्ट टर्म कोर्स

रेगुलर कॉलेजों में पढ़ाई के साथ-साथ रोज़गारपरक स्किल सिखाने के लिए तरह-तरह के शॉर्ट टर्म कोर्स हैं। इनमें कोई समाज कार्य से जुड़ा है तो कोई स्वास्थ्य और खेल के क्रियाकलापों से। कोई शैक्षिक गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण कड़ी साबित होने की ट्रेनिंग देता है तो कोई समाज में भूले-भटके और दिशाहीन लोगों को राह दिखाने की। तीन माह की अवधि वाले ये सर्टिफिकेट कोर्स थ्योरी और प्रैक्टिकल, दोनों से लैस हैं।

ट्रैवल एंड टूरिज़्म

इसमें छात्रों को टूरिज़्म को प्रमोट करने की गतिविधियों में भाग लेने की ट्रेनिंग दी जाती है। मसलन टूरिस्टों के लिए टिकटिंग की व्यवस्था हो या उन्हें दर्शनीय स्थलों पर ले जाने में गाइड करने की, उन्हें ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी देने का सवाल हो या वहां की खासियत बताने का, ये सब चीजें इस कोर्स का हिस्सा हैं।

काउंसलिंग एंड गाइडेंस

यह कोर्स छात्रों को करियर की राह में मार्गदर्शक बनने की ट्रेनिंग देता है। शिक्षा का क्षेत्र हो या खेलकूद, मनोविज्ञान का मामला हो या वोकेशनल ट्रेनिंग का, आज हर जगह काउंसलिंग की ज़रूरत पड़ रही है। इसमें छात्रों को एक दक्ष परामर्शदाता बनने का हुनर सिखाया जाता है। यूजीसी ने 11वें प्लान में विभिन्न शिक्षण संस्थानों में करियर एंड काउंसलिंग सेंटर खोलने की योजना तैयार की है। इस तरह के सेंटर पर काउंसिलिंग के लिए ऐसे युवाओं की ज़रूरत रहेगी।

वोलंटियर मैनेजमेंट

यह कोर्स सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने वाले वोलंटियर्स को तैयार करता है। आज देश से लेकर विदेश तक तरह-तरह की संस्थाएं चल रही हैं। उन्हें अपने कार्यों को सही तरीके से अंजाम देने के लिए फील्ड में काफी संख्या में वोलंटियर्स की ज़रूरत पड़ती है। इसके लिए उन्हें ऐसे युवाओं की आवश्यकता होती है, जो इस कार्य में दक्ष हों। वोलंटियर मैनेजमेंट ऐसे ही छात्रों को तैयार करता है। वोलंटियर क्या है। उसका रोल क्या है। अपने कार्यों को किस ढंग से अंजाम तक पहुंचाना है, ये चीज़ें इस कोर्स में बताई जाती हैं।

स्पोर्ट्स एंड मेडिसिन

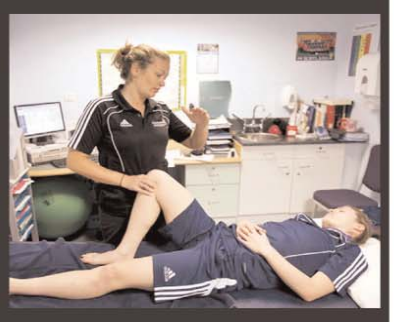

यह कोर्स स्पोर्ट्स मेडिसिन के बारे में छात्रों को जागरूक करता है। खेलकूद के दौरान फिज़ियोथेरेपिस्ट के साथ कैसे मददगार बनें, इसकी ट्रेनिंग इस कोर्स के तहत दी जाती है। विभाग के शिक्षक डॉ. राजेश ने बताया कि पैरामेडिकल वर्कर के रूप में काम करने के लिए यह कोर्स युवाओं को तैयार करता है। इसमें छात्र डॉक्टर नहीं, बल्कि उसके हेल्पर के रूप में काम करते हैं। चाहे वह कॉमनवेल्थ गेम हो या कोई और नेशनल गेम, ऐसे वर्करों की सदा ज़रूरत पड़ती है।

स्पोर्ट्स एंड साइंस जर्नलिज़्म

यह कोर्स पत्रकारिता के अंतर्गत स्पेशलाइज्ड यानी किसी विशेष क्षेत्र में जाने की आधारभूत ट्रेनिंग देता है। छात्रों को इस क्षेत्र में कैसे काम करना है, कैसे अपनी पहचान बनानी है और इसके लिए क्या-क्या तरकीबें अपनानी हैं, इसकी जानकारी प्रदान करता है।

दाखिले की प्रक्रिया

कोर्स में आवेदन 12वीं पास कोई भी छात्र कर सकता है। आवेदन के बाद छात्रों का साक्षात्कार लिया जाता है। इसके बाद मेरिट लिस्ट तैयार होती है। मेरिट लिस्ट में 80 प्रतिशत एकेडमिक प्रदर्शन और 20 प्रतिशत साक्षात्कार का होता है। इसके बाद तय सीटों के मुताबिक लिस्ट तैयार की जाती है।

सेवा और समर्पण
का पेशा नर्सिंग

नर्सिंग स्वास्थ्य सेवा से जुड़ा ऐसा पेशा है, जिसमें व्यक्तियों, परिवारों या यूं कहें कि समुदायों की स्वास्थ्य संबंधी देखरेख की जाती है, ताकि जब तक जीवन है, उसे भरपूर जिया जा सके। न केवल किसी भी अस्पताल की, बल्कि समाज की अनिवार्यता है नर्सिंग। सेवा जब शीर्ष पर पहुंचती है तो नर्सिंग का रूप ले लेती है। वैसे भी नर्स होना समर्पण की एक गाथा है, जिसमें जीवन का संगीत बजता है।

पढ़ाई व पात्रता

भारत में कई नर्सिंग स्कूल हैं, जो डिप्लोमा, डिग्री और पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स करा रहे हैं। इनके अलावा, मिडवाइफरी कोर्स भी चलाए जाते हैं।

बीएससी नर्सिंग

पात्रता – जीव विज्ञान, भौतिकी व रसायन विज्ञान के साथ 12वीं उत्तीर्ण, कोर्स अवधि – 3 से 4 वर्ष
इसमें दाखिला लेने वालों को नर्सिंग, प्राथमिक उपचार और मिडवाइफरी के बारे में मूलभूत जानकारी दी जाती है। इन्हें सैद्धांतिक के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

एमएससी नर्सिंग

पात्रता – बीएससी नर्सिंग, कोर्स अवधि – 2 वर्ष
जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी (जीएनएम)
पात्रता – जीव विज्ञान, भौतिकी व रसायन विज्ञान के साथ 12वीं उत्तीर्ण, कोर्स अवधि – 3 1/2 वर्ष
इस प्रोग्राम को करने वाली नर्सें हेल्थ टीम की सदस्य के रूप में काम करती हैं और अस्पतालों व ऐसे स्थानों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सहायक नर्स मिडवाइफ/ हेल्थ वर्कर (एएनएम)

पात्रता – 10वीं उत्तीर्ण, कोर्स अवधि – 18 महीने
एएनएम कोर्स में इस बात का प्रशिक्षण दिया जाता है कि ग्रामीण इलाकों के मरीजों खासतौर पर बच्चों, महिलाओं व बूढ़ों की देखभाल कैसे करनी है।

कैसा है यह प्रोफेशन

नर्सिंग का अधिकार एक सामाजिक अनुबंध के तहत मिलता है, जो पेशेवर अधिकारों व उत्तरदायित्वों का वर्णन करता है। लगभग सभी देशों में नर्सिंग प्रैक्टिस कानून से परिभाषित और नियंत्रित होती है और इस पेशे में शामिल होने को राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर रेगुलेट किया जाता है। नर्सिंग समुदाय का मुख्य उद्देश्य तो यही है कि सबको उच्च कोटि की देखरेख मिले और इसके साथ ही सभी मानकों, दक्षताओं व इनसे जुड़ी आचार संहिता इत्यादि का पालन हो सके। एक प्रोफेशनल नर्स बनने के लिए शिक्षा के कई रास्ते हैं, लेकिन सबको नर्सिंग सिद्धांत और व्यवहार पढ़ना पड़ता है तथा विलनिकल स्किल्स में प्रशिक्षण लेना ही पड़ता है। नर्स हर उस व्यक्ति की देखरेख करती है, जिसे इसकी जरूरत है, चाहे वह किसी भी उम्र और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का क्यों न हो। इस प्रोफेशन में शारीरिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, नर्सिंग सिद्धांत और प्रौद्योगिकी का समावेश होता है।

काम का माहौल

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी आज प्रशिक्षित नर्सों की कमी है। इस कमी की एक वजह यह बताई जाती है कि जिस वातावरण या माहौल में नर्सें काम करती हैं, वह ठीक नहीं है। हाल के एक समीक्षा पत्र में यह दर्शाया गया है कि नर्सों के काम करने की स्थितियां अच्छी नहीं हैं। पत्र कहता है कि समग्र रूप से नर्सिंग के काम में काफी अधिक काम इनके जिम्मे है, क्योंकि नर्सों की कमी है। एक नर्स को कई मरीजों को देखना पड़ता है और कई काम करने पड़ते हैं। इसके साथ समुचित रोशनी नहीं होती, डॉक्टरों की लिखावट पढ़ने में समस्या आती है। काम के घंटे काफी लंबे होते हैं। इन सबके बावजूद नर्सों को मरीजों की देखभाल का जिम्मा उठाना पड़ता है और वे उठा रही हैं। इस पेशे की पवित्रता तो इसी से बनती है कि हर हाल में बीमार की केयर करनी है और जिनमें सेवा भाव का अतिरेक है, वे बिना किसी शिकायत इसे करती हैं और कर रही हैं। अस्पताल या नर्सिंग होम भी आज अच्छे बनने लगे हैं। सुविधाएं भी बढ़ रही हैं।

नौकरी के अवसर एवं करियर विकल्प

नर्सिंग से संबंधित इन पाठ्यक्रमों को करने के बाद निम्नलिखित जगहों पर नौकरी मिल सकती है – अस्पताल, नर्सिंग होम, क्लिनिक एवं स्वास्थ्य विभाग, अनाथालय एवं वृद्धाश्रम, सेना, स्कूल, इंडस्ट्रियल हाउसेज एवं फैक्ट्रीज, रेलवे एवं सार्वजनिक क्षेत्र के मेडिकल विभाग

प्रशिक्षण संस्थान

हॉस्पिटल नर्सिंग

आज सबसे अधिक नर्सें अस्पतालों में ही काम करती हैं। इन्हें किसी भी क्षेत्र विशेष में कार्य करना पड़ता है जैसे सर्जरी, मेटरनिटी, इन्टेंसिव केयर, पेडिएट्रिक्स, रिहेबिलिटेशन इत्यादि।

पब्लिक हेल्थ नर्सिंग

इसके तहत नर्सें किसी भी सरकारी या निजी क्लिनिकों में, शहरी व ग्रामीण इलाकों के स्वास्थ्य विभागों में काम करती हैं और स्थानीय आबादी को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराती हैं। ये व्यक्तियों, परिवारों व अन्य समूहों को स्वास्थ्य शिक्षा, रोगों की रोकथाम, पोषण और शिशु की देखभाल संबंधी निर्देश देती हैं।

मिलिटरी नर्सिंग

सेना के जवानों को चिकित्सा सेवा प्रदान करती हैं।

शिक्षा

इसमें नर्सिंग के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करना होता है।

इंडस्ट्रियल नर्सिंग/ ऑक्यूपेशनल हेल्थ नर्सिंग

ये औद्योगिक क्षेत्र से जुड़े चिकित्सकों के साथ काम करती हैं और कामगारों को उनकी सुरक्षा के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य की भी देखरेख करती हैं। किसी दुर्घटना के समय इनकी बहुत जरूरत होती है।

साइकिएट्रिक नर्सिंग

ऐसी नर्सिंग में मानसिक रूप से बीमार लोगों की देखभाल करनी होती है। इस काम में काफी धैर्य व समर्पण की जरूरत होती है। इसमें मनोचिकित्सकों व अन्य विशेषज्ञों के साथ काम करना होता है।

पेडिएट्रिक नर्सिंग

यह बीमार बच्चों की मां की तरह देखभाल का क्षेत्र है।

ऑर्थोपेडिक नर्सिंग

इसमें फिजियोथेरेपी और पुनर्वास संबंधी कार्य करने होते हैं।

वेतन

नर्सों का वेतन उनके सीनियर होने के साथ-साथ बढ़ता जाता है। सरकारी अस्पतालों में काम करने वाली नर्सों को 35,000 रुपये मासिक वेतन मिलता है, जबकि निजी अस्पतालों या नर्सिंग होम्स में काम करने वाली नर्सों को 10,000 से 12,000 रुपये मासिक वेतन मिलता है। मिडवाइफ को 4,000 रुपये मिलते हैं और हेल्थ वर्कर्स को 1,000 रुपये से लेकर 2,000 रुपये प्रतिमाह मिलते हैं।

कंप्यूटर ग्राफिक्स का है ज़माना

आज हर घर में अपनी जगह बना चुका कंप्यूटर शायद इतना उपयोगी और लोकप्रिय नहीं हो पाता यदि कंप्यूटर ग्राफिक्स की दुनिया में इतने सारे नए प्रयोग देखने को नहीं मिले होते। यह टॉपिक कंप्यूटर कोर्सेज का भी एक अहम हिस्सा होता है और करियर के लिहाज़ से भी यह हॉट च्वॉइस रहता है। एक से बढ़ कर एक कंप्यूटर गेम्स के रोमांच का मज़ा लेने से लेकर कंप्यूटर पर एनिमेटेड मूवीज़ का लुत्फ उठाना इतना मज़ेदार और आसान नहीं होता यदि ग्राफिक्स में दिन प्रतिदिन नई हलचलें नहीं मचती। आजकल सभी सॉफ्टवेयर जीयूआई आधारित होते हैं जिस कारण इन्हें उपयोग करना काफी आसान हो जाता है। इंटरफेस के रूप में यहां मेन्यू, आइकॉन आदि का उपयोग किया जाता है, जो काफी सुविधाजनक और फास्ट होता है। वास्तव में यह सब ग्राफिक्स का ही तो खेल होता है। कंप्यूटर के द्वारा बनाए जाने वाले ग्राफिक्स कंप्यूटर ग्राफिक्स कहलाते हैं। इसे इस प्रकार से भी कहा जा सकता है कि कंप्यूटर द्वारा इमेज डाटा को जब रिप्रजेंट और मैनिपुलेट किया जाए तो उसे ग्राफिक्स कहते हैं। एनिमेशन, मूवीज़, गेम्स इंडस्ट्रीज़ आदि में इसका खूब प्रभाव पड़ा है। कंप्यूटर द्वारा जब डाटा का पिक्टोरियल रिप्रेजंटेशन और मैनिपुलेशन किया जाता है तो उसे हम ग्राफिक्स कह सकते हैं। कंप्यूटर ग्राफिक्स कंप्यूटर साइंस का एक फील्ड है, जिसके अंतर्गत हम विजुअल कंटेंट को मेनिपुलेट और डिजिटली सिनथेसाइजिंग करने के विधि के बारे में पढ़ते हैं। एनिमेशन भी कंप्यूटर ग्राफिक्स के अंतर्गत ही आता है। एनिमेशन वास्तव में कंप्यूटर की सहायता से मूविंग इमेज (चलती-फिरती पिक्चर) बनाने की कला है। आपको राज़ की बात बताते हैं कि जब भी आप ऐसे एनिमेटिड इमेज देखें तो यह मत सोचिए कि वास्तव में यह चलती फिरती इमेज है। दरअसल होता यह है कि जब स्क्रीन पर कोई इमेज दिखती है तो बहुत जल्द उसी तरह की दूसरी इमेज पहले वाले इमेज को रिप्लेस करती रहती है। यह प्रक्रिया इतनी तेज़ी से होती है कि हम समझ बैठते हैं कि इमेज मूवमेंट कर रही है, जबकि वास्तव में एक इमेज दूसरे इमेज को इसके थोड़े आगे-आगे रिप्लेस करती रहती है।

एप्लीकेशन एरिया

एजुकेशन, साइमुलेशन, ग्राफ रिप्रेजंटेशन, इंजीनियरिंग, मेडिसिन, इंडस्ट्री, आर्ट, एंटरटेनमेंट आदि सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर ग्राफिक्स का बोलबाला है। कंप्यूटर-एडेड डिज़ाइन द्वारा इंजीनियरिंग और आर्किटेक्चर में ग्राफिक्स का खूब इस्तेमाल किया जाता है। फाइन आर्ट, कमर्शियल आर्ट एप्लीकेशंस में भी इसका उपयोग किया जाता है। टेलीविज़न शोज़, म्यूज़िक वीडियो, मोशन पिक्चर्स आदि में भी ग्राफिक्स का ही कमला रहता है।

ग्राफिक्स सॉफ्टवेयर

ग्राफिक्स के लिए उपलब्ध सॉफ्टवेयर को आमतौर पर दो भागों में रखा जाता है-जनरल प्रोग्रामिंग पैकेज और स्पेशल परपज़ एप्लीकेशंस पैकेज। जनरल प्रोग्रामिंग पैकेज सॉफ्टवेयर में कई ग्राफिक्स फंक्शंस होते हैं, जो हाई-लेवल प्रोग्रामिंग लैंग्वेजों में उपयोग किए जाते हैं। इन फंक्शंस द्वारा पिक्चर कंपोनेंट्स डिज़ाइन किए जाते हैं। स्पेशल एप्लीकेशंस पैकेज आमतौर पर उनके लिए हैं, जो कंप्यूटर एक्सपर्ट तो नहीं होते, फिर भी डिस्प्ले जेनरेट कर सकते हैं।